उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. प्रभु दयाल
प्राचार्य, धत्तरवाल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, लाम्बा मण्ड्रेला, जिला झुन्झुनूँ (राजस्थान)

सारांश

भारतीय परिवेश में किये गये अनेक अध्ययन विद्यार्थियों की एकाकीपन की भावना पर प्रकाश डालते हैं और इस तथ्य को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करते हैं कि इस संबंध में किये गये प्रयास व संवैधानिक प्रावधान व्यावहारिक रूप में प्रभावशाली हुए या नहीं। विभिन्न अवसरों की उपलब्धता ने विद्यार्थियों की शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ उनके एकाकीपन में भी कमी की है। साथ ही शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के मार्ग को भी प्रशस्त किया है। इस शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के स्तर में समानता पायी गयी।

संकेत शब्द *– किशोर विद्यार्थी, एकाकीपन।*

प्रस्तावना :–

आज हमारे देश में किशोरों में अनेक कारणों से अपने प्रति एकाकीपन की भावना पैदा हो रही है। वे अपने किशोर जीवन को लेकर समायोजित महसूस नहीं करते है। किशोरों में समायोजन की भावना बहुत ही कम विकसित हो पाती है और वे एकाकीपन की भावना वाले भविष्य की तरफ खीचें चले जाते है। देश में बढ़ती अराजकता के कारण हमें किशोरों में एकाकीपन की भावना को जानना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि युवा ही देश के भविष्य निर्माता होते है। किशोरों के लिए सही शिक्षा की व्यवस्था करना हमारा एक नैतिक कर्तव्य बनता है और शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कमियों को दूर किया जा सके आज हमारे देश में अनेक कारणो में किशोर बालक बालिकाओं का स्वास्थ्य छोटी आयु में ही बिगड़ जाता है जो आगामी जीवन में लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं बन पाता है। इन कारणों में प्रमुख कारण अज्ञानवश अनुचित कारणों को अपनाना है, जिसका एक कारण उनमें अपने भविष्य के प्रति एकाकीपन की भावना है, जिस कारण वे स्वयं को भ्रमित महसूस करते हैं। स्वयं को समाज तथा मित्रों से अलग–थलग पाते हैं। इस समय उनमें अपनी जिज्ञासा का संवेग अपनी चरम सीमा पर होता है। वे अनजाने में ऐसी भूल कर बैठते हैं जो उनके भावी जीवन के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।

किशोर विद्यार्थियों के शिक्षण में उनके सवेंगात्मक स्थिति का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि किसी प्रखर बुद्धि वाले बालक की संवेगात्मक स्थिति अच्छी नहीं है तो वह अपेक्षित शैक्षिक प्रगति नहीं कर पायेगा। यदि बालक को घर में माता–पिता का प्यार नहीं मिलता बल्कि उपेक्षा मिलती है, यदि सहपाठी किसी भी कारण उससे अच्छा व्यवहार नहीं करते या अपने सामूहिक कार्यो में शामिल नहीं करते, यदि शिक्षक उसके साथ सहृद्य का व्यवहार नहीं करते या यदि स्कूल की असफलताओं की याद बराबर परेशान करती रहती है तो प्रखर बुद्धि का होते हुए भी वह योग्यता के अनुरूप शैक्षिक निष्पति प्रदर्शित नहीं कर सकेगा। मानसिक तनाव उत्पन्न करने वाले सवेंग किशोर की मानसिक क्षमताओं को कुंठित कर देते हैं, जिनके कारण वह अपनी शैक्षिक सम्प्रति में वह उसका समुचित प्रयोग नहीं कर पाता है।

एकाकीपन के लिए अंग्रेजी के Alienation शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ अपने को एकाकीपन में महसूस करना है। अवांछित एकांत का परिणाम अकेलापन है। अकेलापन अनुभव करने के लिए अकेले होने की आवश्यकता नहीं है, इसे भीड़ भरे स्थानों में भी अनुभव किया जा सकता है। लाखों लोगों से घिरे होने पर भी नितांत अकेला और कटा हुआ महसूस करते हैं। गुमनाम भीड़ में वे परिचित समुदाय का अभाव अनुभव करते हैं। यह स्पस्ट नहीं है कि अकेलापन उच्च घनत्व वाली जनसंख्या के कारण बिगड़ी हुई

हालत है या इस सामाजिक ढांचे से उत्पन्न मानवीय हालात का हिस्सा मात्र है। यह परित्याग, अस्वीकृति, निसाश, असुरक्षा, चिंता, नैराश्य, निकम्मापन, अर्थहीनता, दुष्कर्म और आक्रोश की भावनाओं में फलीभूत हो सकता है। अकेला होना ऐसा जख्म है जो बढकर कैंसर का रूप धारण कर सकता है । कई लोग अकेलेपन के कारण आत्महत्या तक कर लेते हैं। यह दुनिया अकेले लोगों से भरी पड़ी है। इस अकेलेपन के कारण ही वे ऐसे–ऐसे घिनौने कार्य करते हैं ताकि उनके भीतरी घाव छिपे रह सकें। इस तरह के बर्ताव द्वारा वे अपने खालीपन और नकारात्मकता को छुपाते हैं ताकि उनको संतुष्टि महसूस हो सके। कभी–कभी वह खुद को भूलाना चाहता है तो शराब, गांजा, भांग, अफिम या किसी बड़े नशे की संगति में पड़ जाता है। अकेलापन व्यक्ति के सारे गुणों को खत्म कर, उसे राक्षस बना देता है। बच्चे की एकाकीपन की भावना पर उसके माता–पिता, अध्यापक व वातावरण का प्रभाव पड़ता है। एकाकीपन का मतलब है, अनाकर्षित अस्थायी अवस्था जो मानसिक शक्ति से दूर करती है। कक्षा समूह के अन्दर एक बच्चे को मानने अथवा न मानने के लिए निश्चित रूप से एकाकीपन की भावना उसको प्रेरित करती है।

माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का अध्ययन शिक्षण संस्थाओं के लिए उनकी शक्ति का केन्द्र बिन्दु जानने और सुधार के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में लाभदायक सिद्ध हो सकता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर एक ही कक्षा स्तर के किशोर विद्यार्थियों में समान परिस्थितियों में कुछ किशोर विद्यार्थियों का प्रदर्शन, उनके संवेग, समायोजन, मूलप्रवृत्तियाँ इत्यादि सामान्य, सामान्य से अधिक या सामान्य से कम होता है। इसी परिस्थितीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

समस्या कथनः– उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

शोध के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

पूर्व अध्ययन समीक्षा :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम एकाकीपन की भावना के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ गुप्ता ए.के. (1968) ने जम्मू नगर में 12वीं कक्षा के स्कूल जाने वाले बालकों की सृजनात्मकता व एकाकीपन की भावना के विषय पर अध्ययन किया। इन्होनें पाया कि शाब्दिक एवं अशाब्दिक सृजनात्मकता के विकास के लिए तुलनात्मक रूप से उच्च और स्वस्थ आत्म सम्प्रत्यय तथा आत्मस्वीकृति महत्वपूर्ण है। अत्यधिक सृजनशील बालकों में उच्चतर सुरक्षा तथा उच्चतर आत्मस्वीकृति के गुण पाये गये जिनमें से दोनो उच्चतर समायोजन और सकारात्मक मानसिक स्वास्थय में सहायक थे। शाह जे.एच. (1969) ने ''माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का एकाकीपन और शैक्षिक उपलब्धियों से सहसंबंध'' विषय पर अध्ययन किया इन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि कक्षा 9 व 10 के छात्रों में लिंग आधार पर छात्रों में एकाकीपन की भावना के

सार्थक अन्तर नहीं होता है कक्षा 9 व 10 के छात्रों का मध्यमान अंक में एकाकीपन की भावना की दृष्टि से सार्थक अन्तर नहीं था। रेखीय दृष्टि से शैक्षिक उपलब्धि सार्थक रूप से सकारात्मक थी। रामकुमार वी. (1970) ने एकाकीपन की भावना किशोरियों की विशेषताओं का अध्ययन किया। इन्होनें अध्ययन में पाया कि विद्यार्थी समुदाय उनके एकाकीपन की भावना में मुख्य कारक था। जबकि परिवार का आकार, आवास जैसे तत्वों का एकाकीपन के विकास में योगदान था। सामान्य समूह की अपेक्षा चरम समूह के व्यक्तिगत एवं सामाजिक सामंजस्य में स्कोर कम था। राजनैतिक, धार्मिक व नैतिक क्षेत्रों में चरम समूह का प्राप्तांक अधिक था। पिछड़े समुदाय की लड़कियों में दृढ़ आत्म सम्प्रत्यय पाया गया। सक्सैना एस.के. (1979) में एकाकीपन अध्ययन आदत एवं विद्यालयों अभिवृति का सामाजिक आर्थिक स्तर विभिन्न विभागों में सास्कृतिक व्यवस्था एवं कानपुर जिले क हाई स्कूल के विद्यार्थियों की असफलताओं का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया। इन्होनें अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि समाजिक–आर्थिक स्तर, आत्म सत्प्रत्यय अध्ययन आदत एवं विद्यालयों अभिवृति हाई स्कूल की असफलताओं पर प्रभाव डालती है। ग्रामीण संस्कृति संबंधी प्रथम विभागी लोग शहरी संस्कृति वाले लोगों की अपेक्षा अध्ययन आदतो में अच्छा पैटर्न रखते है। ग्रामीण संस्कृति के छात्रों ने कुशल अध्ययन आदतें एव उपलब्धियां अर्जित की क्योंकि ग्रामीण छात्र ने स्वयं को शहरी छात्रों में पायी जानी वाली बुराइयों से दूर रखा तथा यही परिणाम तृतीय श्रेणी वाले में भी पाये गये। भाटिया, सुनीता (1987) में विशिष्ट एवं सामान्य प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के एकाकीपन की भावना का अध्ययन'' विषय पर अनुसंधान कार्य कर बताया कि भारतीय शिक्षा समिति द्वारा संचालित विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तिगत के विकास में पृथक रहना एवं शान्त स्वभाव कारक का, बुद्धिमान एवं चतुर कारक का व्यक्तित्व में निम्न गर्वरहित कारक का, लज्जा कारक का, व्यवहार करने योग्य कारक का, डरपोक कारक का, परिवर्तन का विरोध कारक का, योगदान नहीं पाया गया। विशिष्ट विद्यालय के विशेष कार्यक्रमों का व्यक्तिगत के विकास में ''सामने–बाहर'' कारक का, प्रसन्नचित कारक का, एवं शिथिल करने वाले कारक का विशेष योगदान पाया गया। प्रसाद, एसत्र (1995) ने ''एकाकीपन की भावना के स्थायित्व पर प्रभाव डालने वाले तत्वों का अध्ययन'' किया। इन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि– (क) चिन्ता, असुरक्षा, आत्म संतुष्टि और सामाजिक परिवर्तन ऐसे तत्व थे जो एकाकीपन की भावना के तत्व को प्रभावित करते हैं। (ख) सामाजिक परिवर्तन आत्म दृढ़ता के तत्व के रूप में स्वतंत्र रूप से नही पहचाने गये। (ग) चिन्ता एकाकीपन की भावना और आत्म संतुष्टि में पुरानी और नयी पीढ़ी महत्वपूर्ण रूप से भिन्नता रखती थी। आई. पण्डित (1995) ने ''किशोरावस्था को मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और आत्म सम्प्रत्यय और उनके समायोजन संबंधी, दृष्टिकोण का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होने पाया कि– (क) किशोरावस्था की आन्तरिक आवश्यकताओं में अन्तर मनावैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे न्यूवता, सहनशीलता, उपलब्धियां, आक्रमकता, आवेश प्रदर्शनी, स्वायतता, प्रबलता और रसीलापन महत्वपूर्ण था। (ख) किशोरावस्था में स्वयं विचार अनुभव के बीच महत्वपूर्ण अन्तर था और स्वयं विचार और स्वयं समाज के बीच भी महत्वपूर्ण अन्तर था। (ग) स्वयं अनुभव और स्वयं समाज के बीच अन्तर महत्वपूर्ण नही था। (घ) किशोर लड़के व लड़कियो में आत्म विचार दर्शाता था कि लड़के लड़कियों की बजाय गुणों और सद्गुणों के प्रति ज्यादा सम्मान रखते थे। (ड) अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक और भावात्मक समायोजन किशोर लड़को का, किशोर लड़कियों की अपेक्षा अधिक संतुष्टि पूर्ण था। भल्ला, एस.के. (2007) ने ''अनुशासित और अनुशासन व एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। इनके अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अनुशासनहीन समूह के छात्र अपने को महान दर्शाते हैं तथा समय को शक्तिशाली भी मानते हैं। दूसरे समूहों के छात्रों में लज्जा, अन्तः मुर्खता, सामाजिक उपेक्षा और सुसमायोजन अधिक पाया गया। दोनो समूह के छात्र दया, सहयोग, मित्रता, आत्मानुशासन को महत्व देने वाले थे । दोनों समूह संवेग समायोजन की दृष्टि से भिन्न थे। अनुशासित छात्रों की अपेक्षा अनुशासनहीन छात्रों में आत्म

सम्प्रत्यय का मध्यमान कम था। अनुशासनहीनता छात्रों की स्वयं की बुद्धि और सौन्दर्यात्मक आत्माओं पर उच्च विचार पाए। दोनों समूह के छात्रों में आत्म सम्प्रत्यय की दृष्टि से प्रदर्शन करने का भाव अधिक पाया गया। भूषण, डॉ. बृज (2008) ने – महिलाओं में मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक दुश्चिन्ता कार्य स्तर से संबंधित है, अध्ययन में कार्यरत महिलाओं ने अन्य महिलाओं की तुलना में आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक–सम्मान तथा अन्य समान विशेषताओं में महत्व को महसूस किया। कार्यरत् महिलाओं में अन्य महिलाओं की तुलना में निम्न सामाजिक दुश्चिन्ता पाई गई। कार्यरत महिलाओं में मानसिक स्वास्थ्य अच्छा दिखाई दिया। परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं के लिये शिक्षण व्यवसाय को उचित माना। महिला अध्यापिकाएँ सामान्य आवश्यकता तथा तनाव का मुकाबला करने में अधिक सक्षम पाई गई। डोरन, सी (2010) ने भिन्न–भिन्न सामाजिक समूहों के किशोरों की सामाजिक अभिक्षमता का अध्ययन किया और पाया कि लोकप्रिय व अलोकप्रिय, अकेले और तिरस्कृत बालकों की सामाजिक अभिक्षमता के मध्य महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। ड्यूरलोक, जींसवर्ग, टेर्लर, ड्रियको (2010) इन्होनें एकाकीपन के प्रभाव को जानने के लिये 200 विद्यालयों का अध्ययन किया और किशोरों के समायोजन और सामाजिक कौशल को बढ़ाने का प्रयास किया तथा उसमें सफलता भी प्राप्त की।झा, रोशन कुमार (2017), मैनफ्रेड, ई. ब्यूटेल और अन्य (2017), क्ले, रूटलेज (2018), एमी, नोवोटनी (2019), पिर्यसन, तमेरा (2019), लुई, एच्टरबर्ग (2020), एलिसन, कैशिन (2021), खतिवडा, डॉ. लेखराज (2022) ने अपने अध्ययन एकाकीपन तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेशों में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध परिकल्पना :–

- उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में दत संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा डॉ. आर.आर. शर्मा द्वारा निर्मित परीक्षण व विद्यार्थी एकाकीपन मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध न्यादर्श :–

शोधकर्त्ता ने अपने शोध कार्य में झुन्झुनू जिले के विभिन्न अकादमिक विद्यालयों में उच्च माध्यमिक के स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों को लिया है जो कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय से संबंधित है। शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में झुन्झुनूँ जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 150 विद्यार्थियों को; संकाय वार 50–50 चुना गया। जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, स्वतंत्रता अंश, आलोचनात्मक अनुपात

परिकल्पना–1 : उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी संख्या – 1

(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

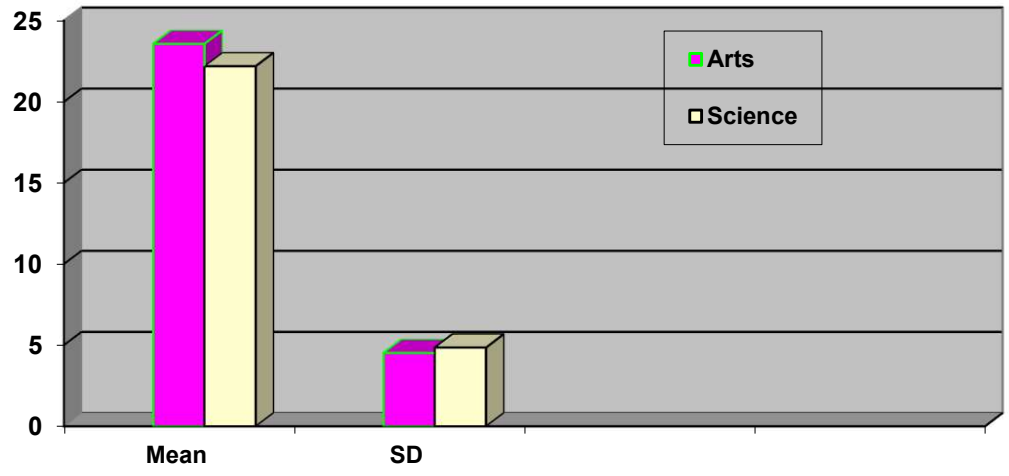
संकाय	विद्यार्थी संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
कला संकाय	50	23.58	4.52	1.38	98	1.48
विज्ञान संकाय	50	22.20	4.85			

व्याख्या एवं विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कला संकाय व विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों की एकाकीपन की भावना के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 23.58 व 22.20 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 4.52 व 4.85 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 1.38 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 1.48 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98 से कम है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः **परिकल्पना – 1 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।** इससे यह स्पस्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थी एकाकीपन की भावना स्तर की दृष्टि से समान हैं। इनमें एकाकीपन की भावना में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

चित्र संख्या – 1

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन



परिकल्पना–2 : उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी संख्या – 2

(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

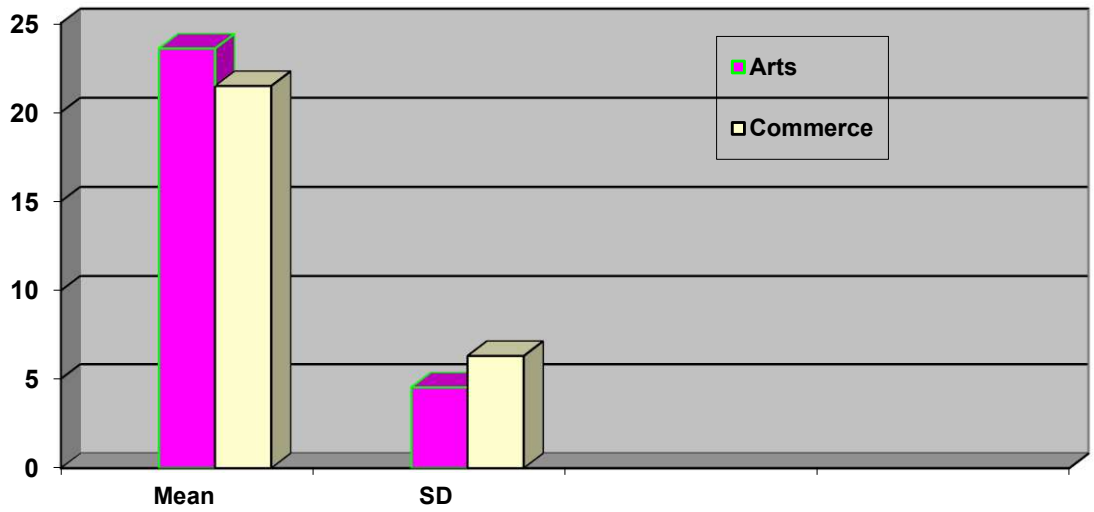
संकाय	विद्यार्थी संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
कला संकाय	50	23.58	4.52	2.10	98	1.94
वाणिज्य संकाय	50	21.48	6.28			

व्याख्या एवं विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों की एकाकीपन की भावना के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 23.58 व 21.48 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 4.52 व 6.28 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 2.10 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 1.94 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98 से कम है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः **परिकल्पना – 2 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।** हालांकी दानों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर है। लेकिन दोनों में सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है वह संयोगवश ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थी एकाकीपन की भावना की दृष्टि से समान होते हैं।

चित्र संख्या – 2

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन



परिकल्पना–3 : उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी संख्या – 3

(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

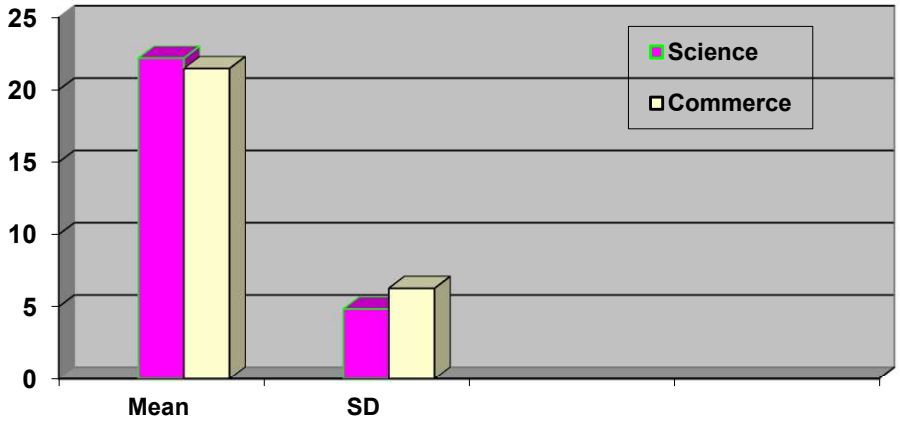
संकाय	विद्यार्थी संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
विज्ञान संकाय	50	22.20	4.85	0.72	98	0.64
वाणिज्य संकाय	50	21.48	6.28			

व्याख्या एवं विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों की एकाकीपन की भावना के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 22.20 व 21.48 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 4.85 व 6.28 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 0.72 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.64 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98 से अत्यंत कम है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः **परिकल्पना – 3 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।** यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों की एकाकीपन की भावना समान है।

चित्र संख्या – 3

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन



परिणाम –

प्रदत्त विश्लेषणों के अनुसार जो भी परिणाम प्राप्त हुए हैं उनसे ज्ञात हुआ है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावनाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जो भी अन्तर है वह केवल संयोगवश ही है या संकाय के प्रति अभिवृत्ति व जागरूकता में अन्तर का परिणाम है। शोध के तीनों संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के प्राप्तांकों के मध्यमानों का अन्तर क्रमशः 1.38, 2.10 तथा 0.72 है, जो कि नगण्य अन्तर है । उक्त परिणाम इंगित करते हैं

कि उच्च माध्यमिक स्तर पर उक्त तीनों संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के स्तर की दृष्टि से समान होते हैं, उनकी एकाकीपन की भावना स्तर में विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

झुंझुनूँ जिले में उच्च माध्यमिक स्तर पर कला संकाय, विज्ञान संकाय व वाणिज्य संकाय के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर पर किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना के स्तर में समानता पायी गयी।

सुझाव :–

- सभी संकायों के विद्यार्थियों हेतु विद्यालय चयन करते समय इनकी बौद्धिक क्षमताओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उपयुक्त परामर्श केन्द्रों की स्थापना की जाये ताकी किशोर विद्यार्थी एकाकीपन का शिकार ना हो तथा अपने लिए सुसंगत व्यवसाय का चयन कर सकें।

संदर्भ सूची :–

गैरेट, एच.ई. (1981). *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी (दशम् संस्करण).* बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे.

गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, ए. (2007). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

शर्मा, एस. (2007). *रिसर्च मैथडोलॉजी : शैक्षिक परिप्रेक्ष्य.* नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.

सिंह, ए. के. (2010). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ.* श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड़, दिल्ली.

जरशिल्ड, ए. टी. (2012). *किशोर मनोविज्ञान.* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना.

सिंह, बी. (2020). *अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया.* श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

अग्रवाल, वी., एवं मिश्रा, एस. (2020). *मनोव्याधिकी.*एस. बी .पी. डी. पब्लिकेशनस, आगरा.

मार्केस, जी. जी. (2021). *एकाकीपन के सौ वर्ष(प्रथम् संस्करण).* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

पाठक, पी. डी. (2021). *शिक्षा मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (यू.पी.).

सिंह, ए. के. (2021). *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान.* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

सिंह, आर. एन., कुरैशी, ए. एन., एवं भारद्वाज, एस. एस. (2023). *आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान.* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा (यू.पी.).

Horrocks, J. E. (1951). The psychology of adolescence: Behavior & development. Houghton Mifflin, *Houghton.*

Crow, L. D. & Crow, Alice (1956). *Adolescent development & adjustment*. McGraw Hill Book Company, New York.

Hurlock, E. B. (2007). Child Growth & Development. Whitefish (Montana). Kessinger Publishing.

How to cite reference of this paper-

दयाल, पी. (2023). उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन. *Educational Metamorphosis 2*(1), 100-107.